5

देखो जी आदीश्वरस्वामी...

(कविवर पण्डितश्री दौलतरामजी)

देखो जी आदीश्वरस्वामी, कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग[१] विराजे, आसन थिर ठहराया है ॥टेक॥

जगत् विभूति भूति[२] सम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा, आशा वासा, नासा-दृष्टि सुहाया है ॥1॥

कंचनवरन[३] चले मन रंच न, सुर-गिरि[४] ज्यों थिर थाया है।
जास-पास[५] अहि[६] मोर मृगी[७] हरि[८], जाति विरोध नसाया है ॥2॥

शुद्ध उपयोग हुताशन[९] में जिन, वसुविधि[१०] समिध[११] जलाया है।
श्यामलि[१२] अलकावलि[१३] सिर सोहें, मानो धुआँ उड़ाया है ॥3॥

जीवन-मरन अलाभ लाभ जिन, सबको साम्य बनाया है।
सुर[१४] नर[१५] नाग[१६] नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है ॥4॥

---

१. सुन्दर; २. राख; ३. स्वर्ण का पीलापन; ४. सुमेरुपर्वत; ५. आस-पास; ६. सर्प; ७. हिरण; ८. सिंह; ९. अग्नि; १०. आठ कर्म; ११. हवन-सामग्री; १२. काले-भूरे; १३. घुँघराले बाल; १४. इन्द्र; १५. नरेन्द्र; १६. धरणेन्द्र